भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केंद्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

20 सितंबर, 2025

दुश्मन को हथियार सौंप कर, मुख्यधारा में शामिल होकर उत्पीडित जनता को विश्वासघात करना हमारा नीति नही है!

बदले हुए सामाजिक परिस्थिति के मुताबिक, पीछेहट की क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए वर्ग संघर्ष–जनयुद्ध को चलाना ही हमारा कर्तव्य!

सितंबर 17 से प्रिंट, इलेक्ट्रनिक और डिजिटल मीडिया में हमारा पार्टी का पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड सोनु द्वारा अभय के नाम पर जारी किया गया प्रेस विज्ञप्ति, उसका आडियो फाईल, क्रांतिकारी जनता के लिए विज्ञप्ति व्यापक रूप से प्रचार हो रही है. 'बदले हुए विश्व एवं देश के परिस्थितियों के अलावा लगातार देश के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री से लेकर वरिष्ट पुलीस अधिकारियों तक हम हथियार छोड़कर, मुख्यधारा में शामिल होने के लिए किये जा रहे अनुरोधों के मद्धे नजर हम हथियार छोडकर, मुख्यधारा में शामिल होने का निर्णय लिये हैं.' ऐसा उन्होने इस विज्ञप्ति में एलान किया. यह, हमारा पार्टी महासचिव शहीद कामरेड बसवराजु द्वारा शांति वार्ता के लिए किए गये कोशिश का भाग करके उन्होने कहा.

कामरेड सोनु द्वारा दिये गये यह प्रेस विज्ञप्ति उनका व्यक्तिगत निर्णय है.' उनका इस प्रेस विज्ञप्ति को हमारा केंद्रीय कमेटी, पोलित ब्यूरो, दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी (डीके एसजेडसी) पूर्ण रूप से तिरस्कार कर रही हैं, तीव्र निंदा करती हैं.

बदले हुए अंतरराष्ट्रीय और देशीय परिस्थितियॉ हथियारबंद संघर्ष को छोडने का संकेत नही दे रही हैं. इसके विपरीत हथियारबंद संघर्ष को चलाने का जरूरत को दर्शा रही है/सिद्ध कर रही हैं. पिछडा देशो की उत्पीडित राष्ट्रीयताओं पर, जनता पर साम्राज्यवाद की लूट और उत्पीडन दिन ब दिन और तेज हो रही है. पूंजीवादी–साम्राज्यवादी देशों में पूंजीपती वर्ग ने वहा की मजदुर वर्ग पर, मध्यम वर्ग पर सरकारी खर्च का कम करने के नाम पर (austerity) लूट और उत्पीडन को बढ़ा रही है. वहा की लुटेरे वर्गने नस्लवाद को, फासीवाद को लागू कर रही हैं. यह सब दिन ब दिन तेज हो रही साम्राज्यवाद की आर्थिक और राजनीतिक संकट का नतीजा है. अपना देश में साम्राज्यवादीयों की दलाल नौकरशाही पूंजीपतिरयों की विदेशी, स्वदेशी बड़े कारपोरेट कंपनिया कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र के साथ समाज का हर क्षेत्र में लूट और उत्पीडन को बढ़ा रही हैं. इससे, शहरी, मैदानी, जंगली इलाको में व्यापक जनता (उत्पीडित वर्ग, उत्पीडित सामाजिक समुदाय, उत्पीडित राष्ट्रीयताओं की जनता) साम्राज्यवादी, दलाल नौकरशाही पूंजीपति, सामंती वर्ग की गठजोड के विरोध में वर्गसंघर्ष को और भी व्यापक–तेज करने की जरूरत को दर्शा रही है. ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी हमलों को प्रतिरोध करने की जरूरत को सामने ला रही है. दुनिया भर में, अपना देश में आर्थिक और राजनीतिक असमानताये बढ़ रही हैं. दुनिया में, अपना देश में भी जनता की दैनंदिन समस्या भी, बुनियादी समस्या भी हल नहीं हो रही है. ऐसी स्थिति में खुला–गुप्त; कानूनी–गैर कानूनी संघर्ष और संगठन पद्धतियों को समन्वय करते हुए हथियारबंद संघर्ष को चलाने की जरूरत है.

हमारा पार्टी महासचिव शहीद कामरेड बसवराजु (बीआर) शांति वार्ता के लिए किये कोशिश के अनुसार हथियार छोडने का निर्णय लेने का कामरेड सोनु की बात सच्चाई को तोड–मरोड करने वाली है. शहीद कामरेड बसवराजु की मई 7 तारीख की प्रेस विज्ञप्ति में हथियार छोडने की विषय पर हमारी पार्टी की कोर गृप में चर्चा करने का उल्लेख किया था. लेकिन इस वक्तव्य का गलती को समझकर और केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा कगार युद्ध को रोकेबिना चलाने की विषय को ध्यान में रखकर हथियार छोडने की बात को वापिस लेकर, कगार युद्ध को प्रतिरोध करने के लिए तमाम पार्टी को, पीएलजीए को, तमाम क्रांतिकारी खेमें को उन्होने आह्वान किया. उन्ही का (कामरेड बीआर का) मार्गदर्शन में आज देश भर में पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी खेमा कगार युद्ध को शक्ति अनुसार कानूनी–गैर कानूनी तरीका से प्रतिरोध कर रही हैं. इस सच्चाई को जान बूझकर कामरेड सोनु तोड–मरोड कर बता रहा है. यह बात कपट है, निंदानीय है.

'हथियार छोडकर मुख्यधारा में शामिल' होने की विषय पर पार्टी सदस्यों का, अलग–अलग स्तर का पार्टी कमेटीयों का, जेल में बंदी पार्टी कार्यकर्ताओं का, नेतागण का मत/राय लेना, क्रांति का हितैषीयों का, जनवादी, प्रगतिशील, वामपंती शक्तियों का–संस्थाओं का मत/राय लेना हमारा पार्टी को तोडने का दुष्ट योजना है. इस दुष्ट योजना को छोडने के लिए कामरेड सोनु से हम मांग (अपील) कर रहे हैं. इस दुष्ट योजना को विरोध करने के लिए देश भर के जन संगठन को, पार्टी सदस्यों को, अलग–अलग स्तर का पार्टी कमेटीयों को, जेल में बंदी पार्टी कार्यकर्ताओं को–नेतागण को, क्रांति का हितैषीयों को, जनवादी, प्रगतीशील, वामपंती शक्तियों–संस्थाओं को हम आह्वान कर रहे हैं.

भारत की क्रांतिकारी आंदोलन हार जाने की बात को कहते हुए, पार्टी द्वारा अपनाई गई वामपंती संकीर्णतावादी गलतीयों के कारण यह स्थिति उत्पन्न होने की बात कामरेड सोनु ने 'क्रांतिकारी जनता को अपील' नाम से लिखा गया प्रेस विज्ञप्ति में लिखा हैं. अगर पार्टी वामपंती संकीर्णतावादी/वामपंती दुस्साहस वादी गलतीयॉ करने से पार्टी में रहकर उसे सुधारने के कोशिश करना पोलित ब्युरो सदस्य होने के वजह से उनका जिम्मेदारी बनता हैं. लेकिन वह इस क्रांतिकारी पद्धति को छोड़कर मुख्यधारा में शामिल होने का निर्णय लिया हैं.

'अब से, भारत देश की बदले हुए परिस्थितियों से, स्थल–काल से मेल ना खाने वाली दिर्घकालीन जनयुद्ध, हथियार बंद संघर्ष, चीन की रास्ता, रूस की रास्ता का कटमुल्लवादी (डागमाटिक) व्यवहार को छोड़कर भारत देश की स्थल–काल से मेल खोने वाली रास्ता अपनाकर भारत देश की क्रांति को सफल बनाने की कोशिश करना ही पार्टी के सामने बचा हुआ एक मात्र कर्तव्य.'' ऐसा 'क्रांतिकारी जनता को अपील' नाम के प्रेस विज्ञप्ति में कामरेड सोनु ने लिखी. अगर पार्टी द्वारा अपनाने वाले रास्ता (लाईन) कटमुल्लावाद (डागमा) है तो कामरेड सोनु वैकल्पिक रास्ता (लाईन) को तैयार कर पार्टी में अन्दरूनी बहस (टू लाईन स्ट्रगुल) चला सकता है. लेकिन वह ऐसा करने तैयार नही है. एक तरफ हथियार बंद संघर्ष को नकारते हुए दूसरी तरफ 'हथियार बंद संघर्ष को अस्थाई रूप से त्याग' ने की बात कहने का मतलब पार्टी कतोरों को, जनता को धोखा देना होता है.

मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के अनुसार क्रांति का केंद्र कर्तव्य राज्य सत्ता को हथियान होता है. इसलिए हथियारों को लेकर हथियारबंद संघर्ष करते हैं. दीर्घकालीन जनयुद्ध में भी, सशस्त्र बगावत में भी हथियार की बल पर लुटेरे वर्ग को सत्ता से हटाकर उत्पीडित जनता सत्ता को चीन लेती है. अपना देश अर्धउपनिवेश, अर्धसामंती देश होने के वजह से हमारा पार्टी दीर्घकालीन जनयुद्ध की रास्ता को अपना रही है. इसलिए हथियार छोडकर शांती वार्ता करने का निर्णय लेना मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद का विरोध होने के साथ–साथ हमारा पार्टी का राजनीतिक एवं सांगठनिक लाईन का भी विरोध होता है.

हथियार छोडने का मतलब उसे दुश्मन को सौंपना होता है और दुश्मन का सामने आत्मसमर्पण (सरेंडर) होता है. दुश्मन को हथियार सौंप कर, उन्हे सरेंडर होकर, 'हथियारबंद संघर्ष को अस्थाई रूप से त्याग' ने के नाम पर हथियारबंद संघर्ष को छोड देने का मतलब क्रांतिकारी पार्टी को संशोधनवादी पार्टी में बदल देना होता है.

हथियारों को दुश्मन को सौंप कर दुश्मन का सामने आत्मसमर्पण करने से शहीदों को, देश के व्यापक जनता (उत्पीडित वर्ग, उत्पीडित सामाजिक समुदाय, उत्पीडित राष्ट्रीयताओं का लोग) का विश्वासघात करना होता है. यह प्रचंडा जैसी आधुनिक संशोधनवाद और क्रांति के प्रति गद्धारी है. इसलिए, हथियारों को दुश्मन को सौंप कर, दुश्मन का सामने आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार हो रहे सोनु की गद्धारी को सभी पार्टी सदस्य; सभी स्तर का पार्टी कमेटीयॉ, जेल में बंदी पार्टी सदस्य–नेतागण, क्रांति का हितैशी लोग तीव्र निंदा करने का हम अनुरोध कर रहे है. सोनु और उनका साथी लोग अगर दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करना चाहते है तो कर सकते है. लेकिन पार्टी का हथियारों को दुश्मन को सौंपने का अधिकार उन्हे नही है. इसलिए उस हथियारों को हमारा पार्टी को सौंपने का डिमांड कर रहे हैं. अगर सकरात्मक तरीका से नही सौंपने से उनसे जप्त करने के लिए पीएलजीए को हम निर्देशित कर रहे हैं. हथियारबंद संघर्ष को नकारने वाले सोनु 'हथियारबंद संघर्ष को अस्थाई रूप से त्याग' ने बात सिर्फ धोखाबाजी है. वह अपनाने वाले रास्ता संसदीय चुनावी रास्ता होगी. इसलिए, यह नेपाली क्रांति की गद्धार प्रचंडा अपनाई नया संशोधनवाद होता है.

हमारा पार्टी का बुनियादी लाईन (बेसिक लाईन) को, नीतियों को, प्रस्ताव को वचनबद्ध होकर देश, दुनिया के राजनीतिक घटनाओं पर पार्टी का रवैया बताना, संघर्ष के लिए जनता को आह्वान देना मीडिया प्रतिनिधि अभय का जिम्मेदारी. इस नीती का विपरीत रवैया अपनाने वाले सोनु को अभय के नाम से प्रेस विज्ञप्ति जारी करने का अधिकार नही है.

केंद्रीय कमेटी द्वारा जारी किये जाने वाले इस प्रेस विज्ञप्ति के साथ दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सम्पुर्ण रूप से सहमत है. इस प्रेस विज्ञप्ति को दंडकारण्य में सभी जनसंगठनों तक, सभी संगठन तक, जनता तक ले जाकर जनता को, सभी संगठनों को क्रांतिकारी आंदोलन में दृढ़ता के साथ खड़े करवाने का राजीनीतिक, सांगठनिक काम करने के लिए दंडकारण्य की सभी पार्टी सदस्यों को, सभी स्तर का पार्टी कमेटीयों को, कमानों को हम आह्वान कर रहे हैं.

अभी भी हमारा पार्टी शांती वार्ता के लिए तैयार है. इसलिए केंद्र, राज्य सरकारों पर दबाव डालकर उसे शांती वार्ता के लिए सहमत कराने देशव्यापि जुझार जन आंदोलन खड़े करने के लिए नागरिक समाज (सिविल सोसाईटी) से, तमाम जनता से हम अनुरोध कर रहे हैं.

केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा चलाये जाने वाले प्रतिक्रांतिकारी कगार युद्ध से अपना पार्टी को, पीएलजीए को, तमाम क्रांतिकारी आंदोलन को हो रही गंभीर नुक्सानों से डरकर हथियारों को दुश्मन को सौंप कर, दुश्मन को आत्मसमर्पण करने से शहीदो के प्रति, जनता के प्रति गद्धारी होती है. उस गद्धारी को तिरस्कार करते हुए/नकारते हुए बदले हुए सामाजिक परिस्थिति के अनुसार, पीछेहट की क्रांतिकारी आंदोलन को आगे ले जाने के लिए वर्गसंघर्ष–जनयुद्ध को जारी रखना ही अपना कर्तव्य. क्रांतिकारी आंदोलन में पीछेहट, हार अस्थाई का ही है, आखिरी जीत जनता का होगी. इस पृथ्वी पर एक इन्सान दूसरा इन्सान को लूटने का मौका ना रहने वाली समाज के लिए हजारों सालों से वर्गसंघर्ष चल रही है. इस वर्गसंघर्ष की लंबा प्रस्थान (लांगमार्च) जीत–हार–अंत में जीत की दौर से गुजर रही है. इस महा प्रस्थान की आखिरी जीत इस पुथ्वी पर समाजवाद–साम्यवाद को सथापित करने से होती है. इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन में घटित होने वाली पीछेहट, हार से न डरते हुए अपना देश में, दुनिया में समाजवाद–साम्यवाद को स्थापना करने के लिए अपना हिस्सा के तौर पर वर्गसंघर्ष–जनयुद्ध को चलाते हुए आगे ले जाना ही अपना कर्तव्य–अपना मार्ग/अपना लाईन.

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ

(अभय)
प्रवक्ता
केंद्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ

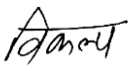

(विकल्प)
प्रवक्ता
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)